2 सितम्बर 2009, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
# पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

**जबतक आप स्वयं अपने आत्मा की सुध-बुध नहीं लेंगे, उसे नहीं जानेंगे, नहीं पहिचानेंगे, उसमें ही नहीं जम जायेंगे, रम जायेंगे; तबतक इन अपराधों के फल आकुलता और अशांति से मुक्ति मिलनेवाली नहीं है।**
ह्न धर्म के दशलक्षण, पृष्ठ 185

वर्ष : 32, अंक : 11 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
सितम्बर (प्रथम), 2009 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

## कोटा संभाग द्वारा बुन्देलखंड की तीर्थयात्रा संपन्न

**कोटा :** अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, कोटा संभाग द्वारा दिनांक 7.8.09 से 16.8.09 तक बुन्देलखण्ड के तीर्थक्षेत्रों की वंदना का आयोजन किया गया। तीर्थयात्रा के संघपति श्रीमती सुनीता धर्मपत्नी श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा परिवार एवं उद्घाटनकर्ता श्रीमान प्रकाशचन्दजी खटोड़ कोटा व श्री प्रेमचन्दजी जैन जमीतपुरा परिवार थे। श्री प्रेमचन्दजी सोगानी परिवार बारां, श्री अशोकजी गंगवाल परिवार बारां एवं श्री विकासजी गंगवाल परिवार बारां की ओर से तीर्थयात्रा किट वितरित किये गये।

यात्रा में मुम्बई, जयपुर, चित्तौड़, बूंदी, रत्नौद, शिवुपरी इत्यादि अनेक स्थानों से 200 साधर्मीजन सम्मिलित हुए। यात्रा में पण्डित सुरेशजी पिपरा टीकमगढ, पण्डित जयकुमारजी बारां, पण्डित प्रियंकजी शास्त्री रहली, पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री अभाना, पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर, पण्डित विनयजी शास्त्री बूंदी, पण्डित अमितजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित आशीषजी शास्त्री कोटा एवं ब्र. ममता दीदी आदि विद्वानों का लाभ मिला।

सम्पूर्ण यात्रा श्री विनोदकुमारजी सेठिया कोटा के दिशानिर्देश व पण्डित जयकुमारजी बारां के कुशल निर्देशन एवं पण्डित निकलंकजी शास्त्री कोटा के संयोजकत्व में आयोजित की गयी।

यात्रा को सफल बनाने में श्री विक्रान्त जैन, चेतन जैन, सुनील जैन देवरी, विनोद जैन फतेहगढी, प्रशान्त जैन, अखिलेश जैन, मुकेश जैन, अनेकान्त जैन की सक्रिय भूमिका रही। **ह्न विक्रान्त कुमार जैन**

## उपकार दिवस के उपलक्ष्य पर निबंध प्रतियोगिता

**इन्दौर :** श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन इन्दौर के तत्त्वावधान में 'उपकार दिवस' के उपलक्ष्य पर आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के विषय पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गयी। कुल 72 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं। इसमें प्रथम स्थान श्रीमती कांति जैन जबलपुर, द्वितीय स्थान इन्द्रा डायोढिया जबलपुर, तृतीय स्थान कु. अंकिता जैन जबलपुर ने प्राप्त किया तथा श्रीमती सुनीता जैन जबेरा, कु. रचना जैन जबेरा, श्रीमती पूजा जैन जबलपुर, श्रीमती कल्पना सिंघई जबेरा, कु. प्रेक्षा जैन जबेरा, श्री संजय जैन, अलका जैन इन्दौर, श्रीमती निरंजना जैन जबलपुर, श्री रजत जैन (विन्नम) भिण्ड, श्रीमती अर्चना जैन इन्दौर, कु. श्रद्धा जैन जबेरा ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। इन निबंधों का मूल्यांकन पण्डितश्री विमल-चंदजी झांझरी, श्री जम्बू जैन धवल एवं पण्डित सौमिलजी शास्त्री द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम के प्रमुख संयोजक विजय बड़जात्या, सहसंयोजक राजेश काला, सुनील जैन, रितेश बेड़िया, जम्बू जैन धवल, पण्डित दीपक शास्त्री थे। **ह्न श्री दि.जैन कुंदकुंद परमागम ट्रस्ट**

### डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल हीरक जयन्ती वर्ष ह्न
## मुम्बई में डॉ. भारिल्ल का अभिनंदन

**मुम्बई :** अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा डॉ. भारिल्ल का हीरक जयन्ती वर्ष मनाया जा रहा है, यह जानकारी समाज को मिलते ही देश-विदेश के मुमुक्षु समुदाय में हर्ष की लहर दौड़ गयी है; सभी में अपने-अपने यहाँ इस संदर्भ में एक कार्यक्रम आयोजित करने की होड़ लग गयी है। इसी क्रम में श्वेताम्बर पर्यूषण पर्व के अवसर पर जैन अध्यात्म स्टडी सर्कल्स फैडरेशन द्वारा दिनांक 19 अगस्त 2009 को भारतीय विद्या भवन के विशाल ऑडोटोरियम में डॉ. भारिल्ल का शॉल एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट कर अभिनंदन किया गया।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए जैन अध्यात्म स्टडी सर्कल्स फैडरेशन के चेयरमेन श्री दिनेशभाई मोदी ने डॉ. भारिल्ल द्वारा अध्यात्म के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में किये गये कार्यों को अभूतपूर्व बताया। उनकी कर्तव्य-निष्ठा व लगनशीलता का उल्लेख करते हुए कहा कि डॉ. भारिल्ल ने जो भी कार्य अपने हाथ में लिया उसे कभी अधूरा नहीं छोड़ा। अध्यात्म स्टडी सर्कल के व्याख्यानमाला में वे विगत 28 वर्षों से लगतार पधार रहे हैं। उनकी यह लगन व निरन्तरता कार्य के ठोस परिणाम प्रदर्शित करती है। यही कारण है कि **कानजी स्वामी ने अपना वारसा डॉ. भारिल्ल को ही सौंपा है और किसी को नहीं।**

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट सोनगढ के संस्थापक अध्यक्ष श्री रामजीभाई दोशी के सुपुत्र श्री सुमनभाई दोशी ने कहा कि जिसप्रकार डॉ. भारिल्ल के रोम-रोम में पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी बसे हैं, उसीप्रकार मेरे रोम-रोम में डॉ. भारिल्ल बसे हैं। इसके अलावा पूज्य श्री कानजी स्वामी ट्रस्ट देवलाली के प्रमुख ट्रस्टी श्री मुकुन्दभाई खारा एवं श्री कान्तिभाई मोटाणी तथा पाटनी कम्प्यूटर्स सर्विसेज के श्री गजेन्द्रकुमार पाटनी ने भी उनकी विशेषताओं का उल्लेख करते हुए अनेक संस्मरण सुनाये।

## 28वाँ जैन अध्यात्म महोत्सव सम्पन्न

**मुम्बई :** जैन अध्यात्म स्टडी सर्कल्स फैडरेशन, मुम्बई द्वारा दि. 16 अगस्त से 23 अगस्त 09 तक आयोजित 28वाँ जैन अध्यात्म महोत्सव (पर्यूषण व्याख्यानमाला) के अंतर्गत मुम्बई के विभिन्न सर्कल्स चौपाटी, ताडदेव, दादर, वालकेश्वर, घाटकोपर, मांडवी आदि में आध्यात्मिक प्रवक्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा, पण्डित अभय कुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, पण्डित फूलचन्दजी शास्त्री, पण्डित आदित्य शास्त्री, पण्डित किशोर शास्त्री, पण्डित आदेश शास्त्री एवं पण्डित सुधीर शास्त्री के विभिन्न विषयों पर हुए व्याख्यानों का लाभ उपस्थित जन समुदाय को मिला।

# अक्टूबर शिविर पत्रिका

# अक्टूबर शिविर पत्रिका

सम्पादकीय – 35

## चलते-फिरते सिद्धों से गुरु

(गतांक से आगे ...) ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

११. बोधिदुर्लभानुप्रेक्षा में रत्नत्रयरूप बोधि की दुर्लभता एवं अदुर्लभता का विचार करके, उस उपाय के प्रति प्रवर्तित होना कहा है।

जिस उपाय से सम्यग्ज्ञान की उत्पत्ति हो, उस उपाय की चिन्ता करने को अत्यन्तदुर्लभ बोधि को बोधिदुर्लभ भावना कहते हैं, क्योंकि बोधि अर्थात् सम्यग्ज्ञान का पाना अत्यन्त कठिन है, किन्तु वह सम्यग्ज्ञान निज आत्मा के आश्रय से उत्पन्न होता है, इसलिए सर्वथा दुर्लभ नहीं हैं।

पण्डित जयचन्दजी छाबड़ा ने कहा भी है ह्न

**बोधि आपका भाव है, निश्चय दुर्लभ नाहिं।**
**भव में प्रापति कठिन है, यह व्यवहार कहाहिं।।**

अर्थात् सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप बोधि तो आत्मा का स्वभावभाव है; अत: निश्चय से दुर्लभ नहीं है।'

एक निगोद शरीर में सिद्धों से अनन्तगुणे जीव हैं। इसप्रकार स्थावर जीवों से यह सम्पूर्ण लोक भरा हुआ है। जिसप्रकार बालू के समुद्र में गिरी हुई वज्रसिकता की कणिका का मिलना दुर्लभ है; उसीप्रकार स्थावर जीवों से भरे हुए भवसागर में त्रसपर्याय का मिलना अत्यन्त दुर्लभ है।

त्रसपर्याय में विकलत्रयों (द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय एवं चतुरिन्द्रियों) की बहुलता है। जिसप्रकार गुणों के समूह में कृतज्ञता का मिलना अतिदुर्लभ है; उसीप्रकार त्रसपर्याय में पंचेन्द्रिय पर्याय का प्राप्त होना अत्यन्त कठिन है। पंचेन्द्रिय पर्याय में भी पशु, मृग, पक्षी और सर्पादि की ही बहुलता है। अत: जिसप्रकार चौराहे पर पड़ी हुई खोई हुई रत्नराशि का मिल जाना कठिन है; उसीप्रकार मनुष्यपर्याय का प्राप्त होना अति कठिन है।

यदि एक बार मनुष्यपर्याय मिल भी गई तो फिर उसका दुबारा मिलना तो इतना कठिन है कि जितना जले हुए वृक्ष के परमाणुओं का पुन: उस वृक्ष पर्यायरूप होना कठिन होता है। कदाचित् इसकी प्राप्ति पुन: हो भी जावे तो भी उत्तम देश, उत्तम कुल, स्वस्थ इन्द्रियाँ और स्वस्थ शरीर की प्राप्ति उत्तरोत्तर अत्यन्त दुर्लभ समझना चाहिए।

इसप्रकार अति कठिनता से प्राप्त धर्म को पाकर भी विषयसुख में रंजायमान होना भस्म के लिए चन्दन जला देने के समान निष्फल है। कदाचित् विषयसुख से विरक्त हुआ तो भी तप की भावना, धर्म की प्रभावना और सहज समाधि का, सुख से मरणरूप समाधि का प्राप्त होना अतिदुर्लभ है। इसके होने पर ही बोधिलाभ सफल है ह्न ऐसा विचार करना ही बोधिदुर्लभ भावना है।

यदि काकतालीयन्याय से इन मनुष्यगति, आर्यत्व, तत्त्वश्रवणादि सबकी प्राप्ति हो जाए तो भी इनके द्वारा प्राप्त करनेरूप जो ज्ञान है, उसके फलभूत जो शुद्धात्मा के ज्ञानस्वरूप निर्मल धर्मध्यान तथा शुक्लध्यानरूप परम-समाधि है, वह दुर्लभ है। इसलिए उसकी ही निरन्तर भावना करनी चाहिए। पहले अप्राप्त सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र का प्राप्त होना तो बोधि कहलाता है और उन्हीं सम्यग्दर्शनादिकों को निर्विघ्न अन्य भव में साथ ले जाना, सो समाधि है।

बोधिदुर्लभभावना में रत्नत्रयरूप बोधि को कहीं सुलभ तो कहीं दुर्लभ बताया गया है ह्न इसका मूल प्रयोजन यह है कि यह आत्मा इस षट्द्रव्यमयी विस्तृत लोक से दृष्टि हटाकर ज्ञानानन्दस्वभावी निजलोक को जानकर-पहिचानकर, उसी में जम जाने, रम जानेरूप रत्नत्रयरूप धर्मदशा को शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त कर अनन्त सुखी हो।

अपने इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सर्वप्रथम उपलब्ध मनुष्यपर्याय की दुर्लभता का भान कराया जाता है और फिर उसकी सार्थकता के लिए रत्नत्रय प्राप्त करने की प्रेरणा देने के लिए रत्नत्रय की दुर्लभता का भान कराया जाता है। तदर्थ भरपूर प्रेरणा भी दी जाती है। साथ ही संयोग अनेक बार उपलब्ध हो गये हैं ह्न यह बताकर उनके प्रति विद्यमान आकर्षण को कम किया जाता है।

किन्तु जब यह जीव बोधिलाभ को अत्यन्त कठिन मानकर अनुत्साहित होकर पुरुषार्थहीन होने लगता है, तो उसके उत्साह को जागृत रखने के लिए उसकी सुलभता का ज्ञान भी कराया जाता है।

अत: बोधि की दुर्लभता और सुलभता ह्न दोनों एक ही उद्देश्य की पूरक हैं। बोधिलाभ स्वाधीन होने से सुलभ भी है और अनादिकालीन अनुपलब्धि एवं अनभ्यास के कारण दुर्लभ भी है।

तात्पर्य यह है कि बोधिदुर्लभभावना में बोधि की दुर्लभता बताकर उनकी प्राप्ति के लिए सतर्क किया जाता है और सुलभता बताकर उसके प्रति अनुत्साह को निरुत्साहित किया जाता है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि बोधिदुर्लभभावना के चिन्तन में दोनों पक्ष समानरूप से उपयोगी हैं, आवश्यक हैं, एक-दूसरे के पूरक हैं।

बोधिदुर्लभानुप्रेक्षा का विचार करनेवाले इस जीव को बोधि प्राप्त होने पर कभी प्रमाद नहीं होता।

इस सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को संसार की समस्त दुर्लभ वस्तुओं से भी दुर्लभ जानकर इन तीनों का महा आदर करना चाहिए।

**'दुर्लभ परद्रव्यनि को भाव, सो तोहि दुर्लभ है सुनि राव।**
**जो है तेरो ज्ञान अनन्त, सो नहिं दुर्लभ सुनो महन्त।।**

अर्थात् पर पदार्थों की प्रवृत्ति अपने आधीन न होने से परद्रव्यों के भाव ही वस्तुत: दुर्लभ हैं। हे आत्मन्! तेरा जो अनन्तज्ञानरूप स्वभाव भाव है, वह किसी भी रूप में दुर्लभ नहीं है।' (क्रमश:)

## मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 34

## आठवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

**(गतांक से आगे...)**

जैनदर्शन अकर्तावादी दर्शन है। उसके अनुसार कोई भी द्रव्य अन्य द्रव्य की परिणति का कर्ता-धर्ता नहीं है। निश्चय अर्थात् परमसत्य बात तो यही है; यदि कहीं किसी द्रव्य को किसी अन्य द्रव्य का कर्ता-धर्ता कहा गया हो तो उसे प्रयोजनवश निमित्तादि की अपेक्षा व्यवहारनय से किया गया उपचरित कथन ही समझना चाहिए।

जैनदर्शन में सच्चे देव को वीतरागी और सर्वज्ञ होने के साथ-साथ हितोपदेशी अर्थात् हित का उपदेश देनेवाला तो कहा गया है; किन्तु पर के हित-अहित का कर्ता-धर्ता नहीं माना गया।

अत: यदि कहीं इसप्रकार का व्यवहार कथन प्राप्त हो जाय कि भगवान ने उसका भला किया तो उसका अर्थ यही समझना चाहिए कि भगवान की दिव्यध्वनि में समागत तत्त्वज्ञान को समझ कर उस व्यक्ति ने स्वयं ही स्वयं का भला किया है, भगवान ने उसमें कुछ नहीं किया है।

उक्त तथ्य पर पण्डितजी ने आगे चलकर सातवें अधिकार में अनेक तर्क और युक्तियों के माध्यम से पर्याप्त प्रकाश डाला है।

यदि कोई व्यक्ति अरहंतादिक को भी पर का कर्ता-धर्ता मानकर पूजे तो उसकी वह मान्यता कुदेव संबंधी मान्यता होगी।

इस पर यह प्रश्न हो सकता है कि यदि कोई व्यक्ति भगवान आदिनाथ से महावीर तक चौबीस तीर्थंकरों को भी अपने हित-अहित का कर्ता माने तो क्या वे भी कुदेव कहलायेंगे ?

नहीं, कदापि नहीं; क्योंकि वे तो सर्वज्ञ, वीतरागी और हितोपदेशी होने से सच्चे देव ही हैं; तथापि उसकी वह मान्यता गृहीत मिथ्यात्वरूप कुदेव संबंधी मिथ्या मान्यता अवश्य है; क्योंकि उससे वह अपनी **'एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्ता-धर्ता है'** ह्न इस अनादिकालीन मिथ्या मान्यता का पोषण कर रहा है।

अरे, भाई ! कोई व्यक्ति कुदेव नहीं होता; वह तो यदि सच्चा देव नहीं है, सर्वज्ञ और वीतरागी नहीं है तो अदेव है। इसप्रकार अरहंत और सिद्धों को छोड़कर समस्त संसारी जीव अदेव हैं। उनमें से किसी को भी हम अरहंत-सिद्ध जैसा सच्चा देव माने, सच्चा देव मानकर पूजें तो हमारी वह मान्यता देवसंबंधी कुदेव को माननेरूप गृहीत मिथ्यात्व है।

इस पर कोई कह सकता है कि तो क्या हम देवगति के देवों को भी देव नहीं कह सकते, देव नहीं मान सकते ?

नहीं; भाई ! ऐसी बात नहीं है। देवगति के देवों को देव कहने या मानने में कोई आपत्ति नहीं है; परन्तु धार्मिक आधार पर अरहंत-सिद्ध जैसी पूज्यता उनमें नहीं है।

**यहाँ इस प्रकरण में गृहीत मिथ्यात्व के संदर्भ में सच्चे देव और कुदेव की बात चल रही है। इससे देवगति के देवों का कोई लेना-देना नहीं है। वस्तुत: बात तो ऐसी है कि ये वीतरागी-सर्वज्ञ सच्चे देव देवगति में नहीं; मनुष्यगति में होते हैं, पंचमगति (सिद्ध-अवस्था) में होते हैं। अरहंत भगवान मनुष्यगति के जीव हैं और सिद्ध भगवान पंचमगति के जीव हैं।**

पण्डित टोडरमलजी के काल में दिगम्बर जैनियों में भी ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई थी कि लोग देव के नाम पर भूत-प्रेतादि व्यन्तरदेवों की उपासना करने लगे थे। आज भी स्थिति कोई विशेष अच्छी हो ह्न ऐसा नहीं माना जा सकता; क्योंकि आज भी बहुत से लोग धर्म के नाम पर इसप्रकार की प्रवृत्तियों में लगे रहते हैं और इसप्रकार की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देनेवाले कुगुरुओं की भी कहीं कोई कमी नहीं है।

उक्त सभी प्रवृत्तियाँ गृहीत मिथ्यात्व संबंधी प्रवृत्तियाँ हैं। इनके संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी ने इस अधिकार में खुलकर चर्चा की है।

वे लिखते हैं कि **बहुत से जीव इस पर्याय संबंधी शत्रुनाशादिक, रोगादि मिटाने, धनादि व पुत्रादिक की प्राप्ति के लिए कुदेवादिक को पूजते हैं; भूत-प्रेतादि व्यंतरों को पूजते हैं; सूर्य-चन्द्रमादि ज्योतिषियों को पूजते हैं; पीर-पैगम्बर को पूजते हैं; गाय, घोड़ा, सर्पादि तिर्यंचों को पूजते हैं, अग्नि-जलादिक को पूजते हैं, हथियारों को पूजते हैं; अधिक क्या कहें ह्न रोड़ा आदि को भी पूजते हैं।**

इन सबको पूजने का निषेध करते हुए वे लिखते हैं कि यदि अपने पाप का उदय हो तो वे सुख नहीं दे सकते और पुण्य का उदय हो तो दुख नहीं दे सकते तथा उनको पूजने से पुण्यबंध भी नहीं होता, रागादिक की वृद्धि होने से पापबंध ही होता है; इसलिए उनका मानना-पूजना कार्यकारी नहीं है, बुरा करनेवाला है।

कुदेवों के प्रकरण का समापन करते हुए पण्डितजी लिखते हैं कि देखो तो मिथ्यात्व की महिमा ! **लोक में तो अपने से नीचे को नमन करने में अपने को निंद्य मानते हैं और यहाँ मोहित होकर रोडों को तक पूजते फिरते हैं।**

इस पर कोई कहता है कि उनके पूजने से भले ही कोई लाभ न हो, पर हानि भी नहीं है।

इसतरह की बातें दवाईयों के बारे में भी बहुत चलती हैं। लोग कहते हैं कि होम्योपैथिक दवाई से यदि फायदा नहीं होगा तो नुकसान भी नहीं होगा; पर ऐसा कैसे हो सकता है ? जो नुकसान नहीं करेगी, वह दवाई बीमारी को भी नुकसान कैसे पहुँचा सकती है ? जब बीमारी को भी नुकसान नहीं पहुँचायेगी तो फिर बीमारी का अभाव कैसे होगा ?

अत: यह बात पक्की ही है कि जो वस्तु नुकसान नहीं पहुँचा सकती, वह लाभ भी नहीं पहुँचा सकती। **(क्रमश:)**

# अक्टूबर शिविर पत्रिका

# अक्टूबर शिविर पत्रिका

2 सितम्बर 2009, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

## पुरस्कार वितरण समारोह

**उदयपुर :** अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा 9 अगस्त को शाकाहार दिवस घोषित किया गया है। इस अवसर पर उदयपुर जिला द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण समारोह फतह उच्च माध्यमिक विद्यालय में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. देव कोठारी एम.डी. अमेरिकन हॉस्पिटल, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री जिनेन्द्र शास्त्री प्रदेश प्रभारी, शिवजी गौड़ प्राचार्य फतह विद्यालय, डॉ. महावीरप्रसाद जैन प्रदेश उपाध्यक्ष, श्री हेमन्त शास्त्री प्रदेश संगठन मंत्री, श्री दीपचंद गांधी एवं श्री सुजानमलजी उपस्थित थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री ताराचंद जैन एवं जिलाध्यक्ष भाजपा एवं संचालन पण्डित खेमचन्द जैन एवं प्रतिभा जैन ने किया।

शाकाहार की दैनिक जीवन में उपयोगिता विषयक निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हिमांगी गडिया, द्वितीय स्थान रुचिका जैन, तृतीय स्थान प्रतिभा विग, नरेश मेनारिया। चित्रकला प्रतियोगिता में मेरा पुरोहित ने प्रथम स्थान, ऋत्विका जैन ने द्वितीय स्थान, नेहा जैन तृतीय स्थान, सांत्वना स्थान धुवल शाह, कुशाग्र शाह, आयुषी जैन, मोहनाज हुसैन, गरिमा जैन, अंकिता जैन, सौम्या मिश्र, मयंक सिंघवी, बाबूलाल बड़ोत, भेरुलाल डांगी, श्वेता जैन एवं ज्ञायक जैन ने प्राप्त किये। **ह्न जिनेन्द्र शास्त्री, प्रदेश प्रभारी**

## फैडरेशन शाखा का पुनर्गठन

**नागपुर (महा.) :** यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया। चयन समिति का अधिभार श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री जयकुमारजी देवडिया, श्री सुदीपजी जैन एवं महाराष्ट्र प्रान्तीय अध्यक्ष श्री नरेशजी सिंघई ने सम्हाला। कार्यकारिणी का गठन इसप्रकार किया गया ह्न

**अध्यक्ष :** श्री विपिन जैन शास्त्री, **उपाध्यक्ष :** श्री प्रियदर्शन जैन, **मंत्री:** श्री निखिल सुखानन्द मोदी, **उपमंत्री :** श्री संजय मारवडकर, **प्रचार मंत्री :** श्री मनीष शास्त्री सिद्धान्त व श्री अखिलेश जैन सागर, **कोषाध्यक्ष :** श्री सौरभ सुदीप जैन। **संरक्षक :** श्री दिलीपजी नखाते, डॉ. सुरेशजी सिंघई एवं श्री संदीप जैनी को बनाया गया। इस अवसर पर श्री महावीर विद्या निकेतन के प्राचार्य श्री अशोकजी शास्त्री एवं फैडरेशन के पूर्व अध्यक्ष श्री संदीपजी जैनी ने संयुक्त रूप से सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की साक्षी पूर्वक सभी कार्यकारिणी सदस्यों को पूर्ण निष्ठा से कार्य करने के लिये शपथ दिलाई।

## शुभ कामनायें !

**भोपाल :** अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मध्यप्रदेश के अध्यक्ष श्री विजयजी बडजात्या ने भोपाल निवासी श्री अरुण वर्धमान को प्रांतीय उपाध्यक्ष एवं श्री जितेन्द्रजी सौगाणी को प्रांतीय प्रचार मंत्री मनोनीत किया है। आप दोनों को हार्दिक शुभ कामनायें ! **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

## हार्दिक आमंत्रण

समस्त साधर्मीजनों को सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष है कि तीर्थराज सम्मेदशिखर की पावन धरा पर दि. 20.9 से 27.9.09 तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। आप अपने पधारने की पूर्व सूचना **श्री अरिहन्तप्रकाश झाँझरी, समता मंदिर, चिमनगंज मण्डी, उज्जैन मो. 09826029621, 0734-2559967** को अवश्य प्रदान करें।

## खिल्लीमल जैन को यूनेस्को चेतना अवार्ड

राजस्थान नि:शक्तजन आयुक्त **श्री खिल्लीमल जैन** को यूनेस्को चेतना अवार्ड से सम्मानित किया गया है। श्री जैन को यह अवार्ड रविवार, 9 अगस्त को अलवर में जस्टिस एस.एन. भार्गव ने प्रदान किया।

उल्लेखनीय है कि स्टेट फैडरेशन ऑफ यूनेस्को एसोसिएशन इन राजस्थान द्वारा शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान, मानवाधिकार एवं समाज सेवा के क्षेत्र में श्रेष्ठ भागीदारी निभाने वाले व्यक्तियों को प्रतिवर्ष यूनेस्को चेतना अवार्ड प्रदान किये जाते हैं।

इससे पूर्व श्री जैन को केन्द्रीय नि:शक्तजन अधिनियम, 1955 की राज्य में सफल क्रियान्विति के लिये राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। आपकी इस उपलब्धि के लिये जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई ! **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

## शोक समाचार

**छिन्दवाड़ा निवासी** श्रीमती पुष्पलता जैन जीजीबाई ध.प. श्री अजितकुमारजी जैन के ज्येष्ठ पुत्र **इंजीनियर श्री शैलेन्द्र जैन** का असाध्य रोग के चलते मात्र 50 वर्ष की आयु में 22 जुलाई को शांत परिणामों से देहावसान हो गया है।

आप अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन छिन्दवाडा के मार्गदर्शक एवं स्वाध्याय प्रेमी थे। आपकी स्मृति में परिवार द्वार जैनपथप्रदर्शक समिति को 500/- रुपये प्राप्त हुये, एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो - यही भावना है।

## नवीन प्रकाशन

गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) पर आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी कृत महान टीका 'सम्यग्ज्ञान चंद्रिका' का हिन्दी अनुवाद डॉ. उज्ज्वलाबेन दिनेशभाई शाह मुम्बई द्वारा किया गया है। जो शीघ्र ही प्रकाशित होकर आ रहा है। यह ग्रन्थ 175/-(डाक खर्च सहित) का मनिआर्डर निम्न पते पर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। ह्न पण्डित दिनेशभाई शाह

157/9, निर्मला निवास, सायन(ई.), मुम्बई। (022) 24073581

**प्रकाशन तिथि : 28 अगस्त 2009**

**प्रति,**

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -*
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
**फोन :** (0141) 2705581, 2707458
**E-Mail :** ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127